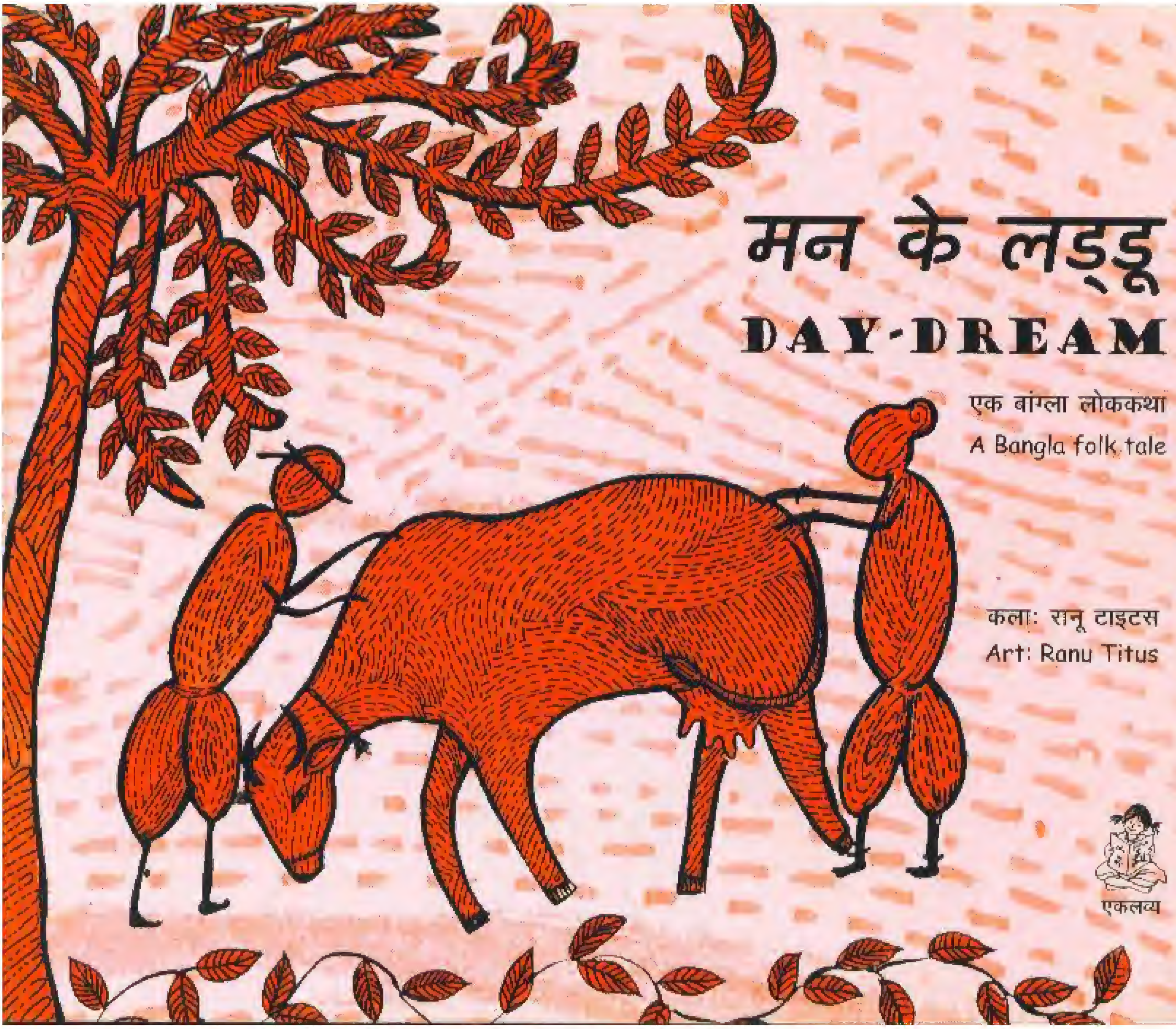

मन के लड्डू

DAY-DREAM

एक बांग्ला लोककथा

A Bangla folk tale

कला: रानू टाइटस

Art: Ranu Titus

एकलव्य

गोपाल भाँड़ के पड़ोस में एक गरीब परिवार रहता था। पति-पत्नी दोनों मन के लड्डू खाने के आदी थे। एक दिन गोपाल ने उन्हें बात करते सुना।

पति कह रहा था, "मेरे पास कुछ रुपए होंगे तो मैं एक गाय खरीदूँगा।"

A poor family lived next door to Gopal Bhand. Both the husband and the wife were day-dreamers. One day Gopal overheard them talking.

The husband said, "When I get some money, I'm going to buy a cow."

पत्नी बोली, "मैं गाय को दुहूँगी। मुझे कुछ हँडियाँ लानी होंगी।"
अगले दिन वह कुम्हार के यहाँ से हँडियाँ खरीद लाई।

पति ने पूछा, "क्या खरीद लाई?"

"ओह ये! कुछ हँडियाँ। एक दूध के लिए, एक छाछ के लिए, एक मक्खन के लिए और एक घी के लिए।"

The wife said, "I'll milk the cow. I'll have to get some pots." The next day she went to the potter and bought pots.

The husband asked, "What did you buy?"

"Oh, these! Some pots. One for milk, one for buttermilk, one for butter and one for ghee."

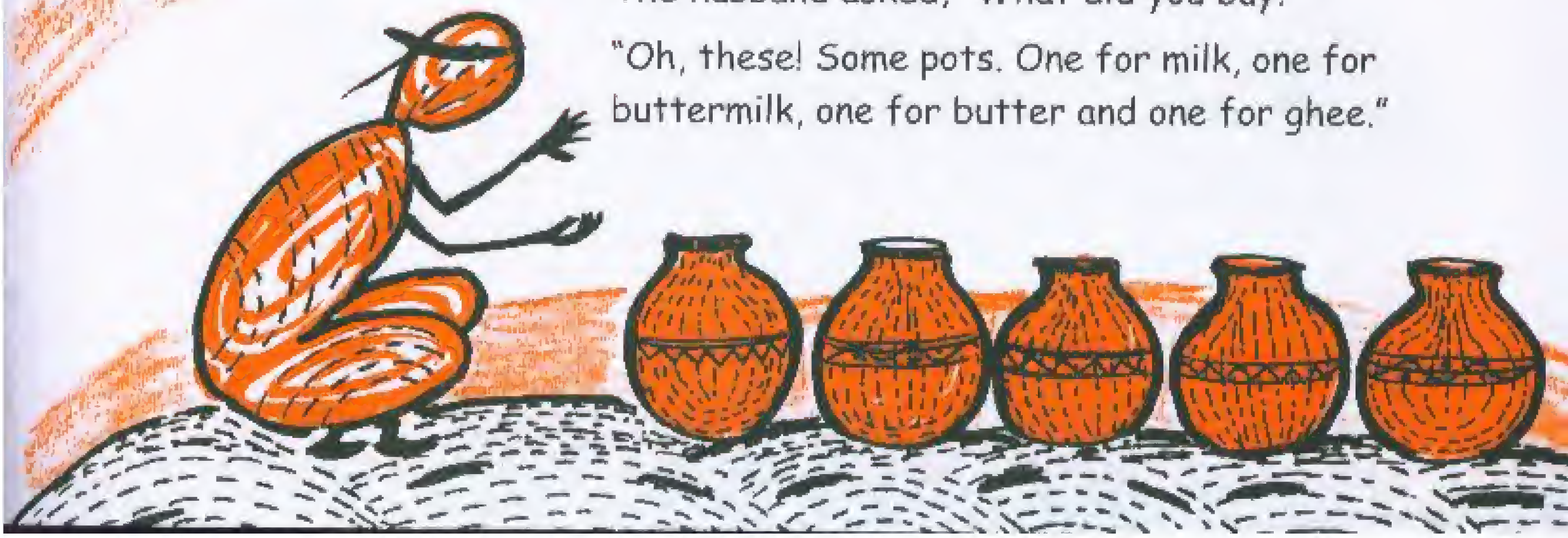

"बहुत खूब! पर इस पाँचवीं का क्या करोगी?"

पत्नी ने कहा, "इसमें अपनी बहन को थोड़ा दूध भेजूँगी।"

"क्या! अपनी बहन को दूध भेजेगी? ऐसा कब से चल रहा है? मुझसे पूछे बगैर?"
पति चिल्लाया और उसने गुस्से में सारी हँडियाँ तोड़ दीं।

"That's great! But what will you do with this fifth one?"

"That is for sending some milk to my sister," said the wife.

"What! Sending milk to your sister? Since when has this been going on? Without even asking me?" shouted the husband and he smashed all the pots in anger.

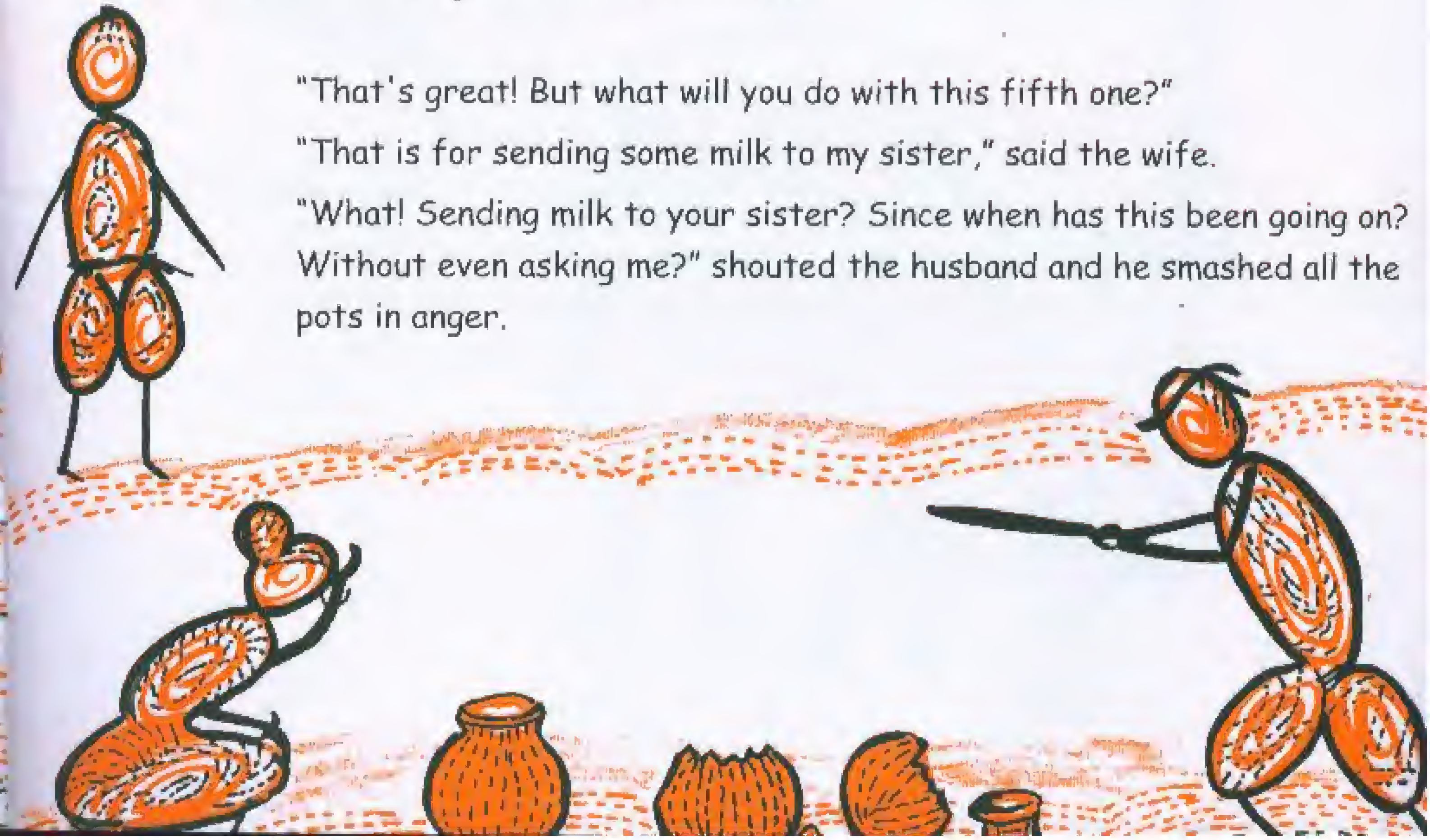

पत्नी ने जवाब दिया, "मैं गाय की देखभाल करती हूँ, उसे दुहती हूँ। बचे हुए दूध का क्या करूँ यह मेरी मरज़ी!"

"मैं दिन भर हाड़तोड़ मेहनत करके गाय खरीदता हूँ और तू उसका दूध अपनी बहन को देती है! मैं तुझे मार डालूँगा!" पति गुर्राया और बरतन-भाँडे फेंकने लगा।

The wife retorted, "I take care of the cow and milk it. I'll do what I wish with the extra milk!"

"I work hard all day and buy a cow, and you give away the milk to your sister! I'll kill you first!" roared the husband and threw some more pots and pans.

आखिर गोपाल से रहा नहीं गया। उसने पड़ोसी के घर जाकर पूछा, "क्या बात है? बर्तन-भाँडे क्यों फेंके जा रहे हैं?"

"यह औरत अपनी बहन को हमारी गाय का दूध भिजवाती है!"

"तुम्हारी गाय?" गोपाल ने पूछा।

"हाँ, वही जो मैं पैसों की जुगाड़ होते ही खरीदने वाला हूँ।"

Gopal could not stop himself any more. He walked over to his neighbour's house and asked, "What's the matter? Why are you throwing pots and pans around?"

"This woman is giving away the milk from our cow to her sister!"

"Your cow?" Gopal asked.

"Yes, the one I'm going to buy when I have enough money."

"अच्छा, *वह* गाय!" गोपाल ने कहा, "पर अभी तो तुम्हारे पास कोई गाय नहीं है, या है?"

पड़ोसी ने कहा, "देख लेना, मैं गाय ज़रूर लाऊँगा।"

"ओह सच! अब मुझे पता चला कि मेरी बाड़ी कौन बर्बाद करता है!" कहते हुए गोपाल ने एक लाठी उठाई और पड़ोसी पर लपका।

"Oh, *that* cow!" said Gopal, "But you don't have a cow yet, do you?"

The neighbour said, "Just wait, I'm going to get one."

"Oh really! Now I know who's spoiling my vegetable garden!" said Gopal, picking up a stick and pouncing on his neighbour.

“ठहरो! ठहरो! मुझे क्यों मारते हो?”
“तुम्हारी गाय मेरे सेम और खीरे खा गई। तुम उसे बाँधते क्यों नहीं?”
“कैसी सेम? कैसे खीरे? तुम्हारी सब्ज़ियों की बाड़ी है कहाँ?”
“वह जिसकी मैं बुवाई करने वाला हूँ! मैं महीनों से उसके बारे में सोच रहा हूँ और तुम्हारी गाय उसे तहस-नहस कर जाती है!”
अचानक पड़ोसी की आँखें खुल गईं। वे ठठाकर हँस पड़े।

"Stop! Stop! Why are you beating me?"
"Your cow ate my beans and cucumbers. Why don't you tie it?"
"What beans, what cucumbers? Where is your vegetable garden?"
"The one I'm going to plant! I've been thinking about it for months, and your cow has been destroying it!"
The neighbour suddenly saw the light. They had a good laugh.

मन के लड्डू / DAY-DREAM

एक बांग्ला लोककथा / A Bangla folk tale

कलाः रानू टाइटस / Art: Ranu Titus

परिकल्पनाः तेजी ग्रोवर / Concept: Teji Grover

© एकलव्य / नवम्बर 2009 / 5000 प्रतियाँ

इस किताब के किसी भी भाग का गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उपयोग के लिए इसी प्रकार के कॉपीलेफ्ट चिन्ह के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में इस किताब का उल्लेख करें और एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

Any part of this book may be used for non-commercial educational purposes under a similar copyleft mark. Mention this book as the source and inform Eklavya. For any other kind of use, please contact Eklavya.

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 130 gsm आर्ट कार्ड (कवर)

ISBN: 978-81-89976-60-6

मूल्यः 20.00 रुपए

प्रकाशकः

एकलव्य, ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्सः (0755) 255 1108
www.eklavya.in,
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः बॉक्स कॉरोगेटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोनः (0755) 258 7651

ISBN: 978-81-89976-60-6
9 788189 976606
एकलव्य
parag
मूल्य: 20.00 रुपए
40112B